मीना की दुनिया
रेडियो कार्यक्रम

मीना रेडियो कार्यक्रम से पुनः कथित

भाग एक

मीना की दुनिया

मनोरंजक कहानियों का संग्रह

अख़बार से क्या सीखा | गुल्लक भरो | नया मेहमान
तस्वीर बनाओ | तितली

unicef

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

unicef
सितम्बर 2011

की दुनिया

भाग एक

विषय सूची

अख़बार से क्या सीखा 03

गुल्लक भरो 09

नया मेहमान 17

तस्वीर बनाओ 21

तितली 27

नन्हे पाठकों के शिक्षकों के लिए 31

KATHA

डिज़ाइन एवं प्रतिलेखन कथा, दिल्ली द्वारा

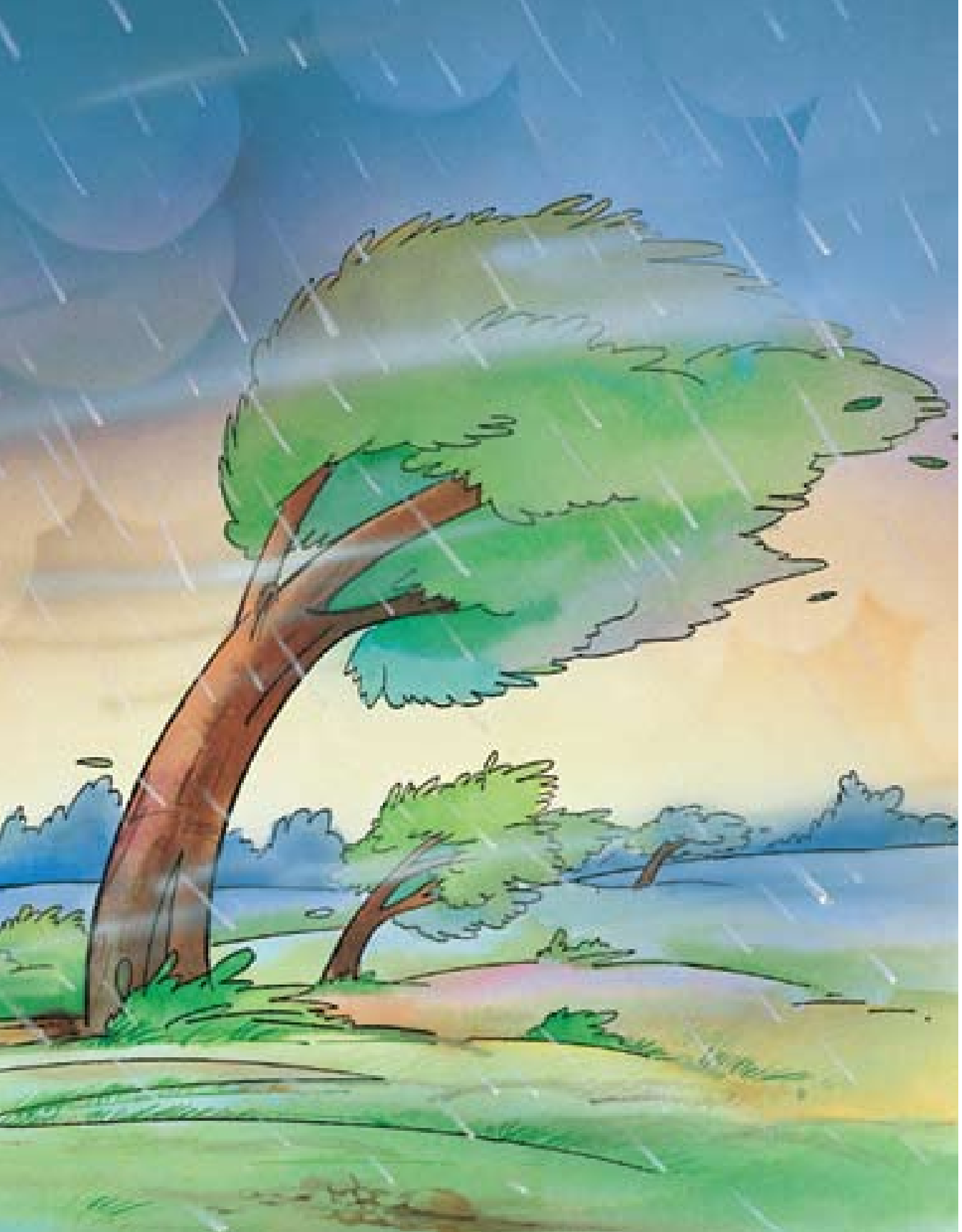

अख़बार से क्या सीखा

ज़ोर लगा के हईया, दम लगाओ भईया।
ज़ोर लगा के हईया, दम लगाओ भईया।

यह था परिणाम कल रात गाँव में आए तूफ़ान का। मीना के स्कूल की छत, पेड़ गिरने से टूट गई थी और गाँव के कुछ लोग उस पेड़ को हटाने में लगे थे। सभी बच्चे अपने बस्ते टांगे स्कूल के इर्द–गिर्द खड़े थे, इस उम्मीद में कि शायद आज पढ़ाई न हो।

पर तभी बहनजी ने आकर यह घोषित किया कि जब तक स्कूल की छत के ऊपर से पेड़ नहीं हटता और छत की मरम्मत नहीं होती तब तक पढ़ाई बाहर ही होगी,

हरी–भरी घास पर, पेड़ों के बीच।

"बिना चॉक और ब्लैकबोर्ड के?" दीपू ने हैरानी से पूछा।

"बिल्कुल! आज हम नए तरीके से पढ़ेंगे!" बहनजी ने यह कहा और अपनी किताबों के बीच से एक अख़बार निकाला।"

"अख़बार? पर बहनजी अख़बार में तो देश–विदेश की ख़बरें होती हैं ... फिर भला हम उन ख़बरों से क्या सीखेंगे?" रानो ने असमंजस से पूछा।

"देखते जाओ बच्चों! दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिससे हमें कोई सीख न मिले। तो चलें, सीखें कुछ नया? तुम सब तीन समूह बना लो, मैं हर एक समूह को अख़बार का एक पन्ना दूँगी। हर समूह का एक बच्चा अपने पन्ने से कोई एक ख़बर ज़ोर से पढ़कर सुनाएगा ... ठीक है?" बहनजी बोली।

"ठीक है बहनजी!" सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा।

पहले बारी थी मीना के समूह की, जिसमें से दीपू ने आकर यह ख़बर पढ़ी –

कल खादरपुर के दो व्यक्तियों की पुरानी दवाई के सेवन से मौत हो गई। खादरपुर के पुलिस अधिकारी ने बताया कि कुछ असामाजिक तत्व गैर–कानूनी रूप से इन पुरानी दवाइयों को बेच रहे हैं। सामान्यतः हर दवाई कुछ समय के लिए ही असरदार होती है, लेकिन उस समय के बाद, उस दवाई का असर ख़त्म हो जाता है या वो ख़तरनाक साबित हो सकती है। दवाई की यह अंतिम तारीख़ हर दवाई पर ज़रूर लिखी होती है ....

इस ख़बर के पढ़े जाने के बाद बहनजी ने बच्चों से पूछा कि इस ख़बर से उन्हें क्या सीखने को मिलता है।

"हमें दवाइयाँ सिर्फ़ डॉक्टर से या फिर दवा की दुकान से ही खरीदनी चाहिए," मीना ने कहा।

रानो ने कहा, "इस ख़बर से हमने यह भी सीखा कि मिलावटी, नकली और पुरानी दवाइयाँ बेचना ना सिर्फ़

गैर–कानूनी है बल्कि एक पाप भी है क्योंकि इससे कई निर्दोष लोगों की जान भी जा सकती है ..."

"और हमने यह भी सीखा कि दवा खरीदने से पहले हमें उस पर छपी अंतिम तारीख़ पढ़नी चाहिए ... और अगर वह अंतिम तारीख़ बीत चुकी हो तो फिर उसे नहीं खरीदना चाहिए ..." दीपू ने कहा।

"शाबाश बच्चों! चलो अब दूसरे समूह की बारी है," बहनजी बोलीं।

दूसरे समूह से सुनील ने यह ख़बर पढ़ी –

मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में कल श्रीलंका के साथ दूसरा एक–दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच भी भारत ने 60 रनों से जीत लिया ... लेकिन भारत के मास्टर बल्लेबाज़ सचिन तेदुंलकर सिर्फ़ 5 रनों से अपना 44वां शतक लगाने से चूक गए ...

सचिन 95 के स्कोर पे रनऑउट हो गए ... दूसरी छोर पर खड़े बल्लेबाज़ हरभजन सिंह सचिन की तरफ़ बिना देखे ही रन लेने के लिए दौड़ पड़े .... और इस प्रकार सचिन अपना विकेट गंवा बैठे ...

बहनजी ने अब इस समूह के बच्चों से पूछा कि हमें इस ख़बर से क्या सीख मिलती है।

सुमी ने कहा, "हरभजन सिंह को दौड़ने से पहले यह देखना चाहिए था कि सचिन भी रन लेना चाहते हैं या नहीं! जब हम एक टीम बना के कोई खेल खेलते हैं तो उस खेल के नियमों के साथ–साथ हमें अपनी टीम के खिलाड़ियों के बारे में भी सोचना चाहिए।"

अब बारी थी तीसरे और आख़िरी समूह की। पर उनके पन्नों में तो सिर्फ़ विज्ञापन ही विज्ञापन थे। तभी बहनजी ने कहा कि विज्ञापनों से भी हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है, बताओ क्या?

सुनील बोला, "आप बिल्कुल ठीक कह रही हो बहनजी ... मैने एक बार शहर के अख़बार में बहुत से होटलों के विज्ञापन देखे थे ... हर होटल को एक–ना–एक रसोईया

चाहिए था .... मैंने तो सोच भी लिया है कि बड़ा हो कर मैं किसी बड़े से होटल में एक बड़ा मशहूर रसोईया बनूँगा .... और जब आप मेरे होटल में आओगी तो मैं आपको आलू के परांठे खिलाऊँगा!"

यह सुन बहनजी और सभी बच्चे खिलखिलाकर हँसने लगे।

"देखा बच्चों, सिर्फ़ एक विज्ञापन पढ़ने से सुनील ने आज ही निश्चय कर लिया कि वह बड़ा हो कर क्या बनेगा!" बहनजी बोली।

मीना ने कहा कि उसने एक विज्ञापन में यह भी पढ़ा था कि यदि हम पानी या बिजली विभाग की सेवाओं से संतुष्ट नहीं हैं तो हम उन्हें फ़ोन करके अपनी शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

तो इस तरह मीना और उसके दोस्तों ने अख़बार से बहुत कुछ सीखा। और यह भी सीखा कि चाहे कोई भी मुश्किल क्यों न आ जाए, हमें उससे घबरा कर अपना काम नहीं रोकना चाहिए।

गुल्लक भरो

आज रीतू और श्रवण बहुत खुश हैं, पिताजी उनकी गुल्लक जो फुड़वाने वाले हैं। दोनों को उनके घर आने का इन्तज़ार है। रीतू बड़बड़ाते हुए – "पिताजी ने कहा था कि आज जल्दी आएँगे लेकिन वो भी न ... "

इतने में मीना आ धमकी।

"अच्छा हुआ मीना जो तुम आ गई। ज़रा बताओ तो, हम दोनों में से किसकी गुल्लक भारी है?" रीतू ने कहा।

मीना हँसते हुए बोली, "अरे! यह तो वही 'हाथी और गाय' वाली गुल्लक हैं न, जिसे कुछ समय पहले चाचाजी तुम दोनों के लिए लाए थे!"

"हाँ–हाँ, ये वही गुल्लक हैं! तुमने ठीक पहचाना," रीतू और श्रवण एक साथ बोले।

"याद है ना मीना, तुम्हीं ने तो बताया था कि तुम्हारा भाई राजू और तुम गुल्लक में पैसे कैसे जोड़ते हो? बाहर जाकर खाने–पीने की चीज़ों पर पैसे नहीं खर्चते और केवल घर में माँ के हाथों से बनी चीज़ें ही खाते हो," रीतू मीना को देखते हुए बोली, "तुमने क्या कहा था? 'सेहत की सेहत और बचत की बचत'।"

"देखो मीना! अब तो मैं पिचकारी ज़रूर लूँगा," श्रवण ने कहा।

"और मेरा रोशनी वाला लट्टू आएगा!" रीतू बोली।

जनाब मिट्ठू मियां अपनी आदत से मजबूर चहके, "लट्टू आएगा ... घूमता जाएगा ..."

"अरे मीना! अब जल्दी बताओ मेरी गुल्लक ज़्यादा भारी है न?" श्रवण ने पूछा।

"देखो भई, अगर बाहर से देखें, तो हाथी से भारी भला कौन हो सकता है? गाय तो उसके सामने हल्की है, लेकिन हमें मज़ा तो तब आएगा, जब खूब सारे पैसे आपस में खन–खन करेंगे ... " हँसते हुए मीना ने कहा।

मिट्ठू मियां मस्ती में गाते हुए – "पिताजी आ रहे हैं, थैला ला रहे हैं ... "

"अरे वाह! पिताजी आ गए!" श्रवण और रीतू बोले, "आपको याद है न कि आज गुल्लक फोड़नी है पिताजी?"

"नमस्ते चाचाजी," मीना बोली।

"नमस्ते बिटिया! घर में सब ठीक हैं न?" पिताजी बोले।

"जी चाचाजी," मीना ने कहा।

"अच्छा बच्चों! तुम खेलो, पहले मैं बाबा को दवाई देकर आता हूँ," पिताजी ने कहा।

जल्दी ही पिताजी दवाई देकर वापस आ गए, "कहाँ है तुम्हारी गुल्लक? लाओ?"

रीतू बोली, "पहले मेरी हाथी वाली!" पिताजी ने बारी–बारी से दोनों बच्चों की गुल्लक फोड़ी और गुल्लक

फूटते ही सिक्के खन–खन करते हुए इधर–उधर बिखर गए।

"बच्चों! अब तुम इन्हें गिनो, और मुझे बताओ," पिताजी ने कहा।

रीतू और श्रवण सिक्के गिनने लगे, एक, दो, तीन ... रीतू झट से बोली, "एक वाले पाँच, दो वाले तीन और पाँच वाले दो! तो हो गए पूरे बीस।"

"... और मेरे पास एक वाले आठ, दो वाले चार और पाँच वाला एक! तो, हो गए पूरे इक्कीस रुपये," श्रवण पहले से ही मन–ही–मन खुश था कि जैसे ही गुल्लक फूटेगी वह बाज़ार जाएँगे।

"क्या अब बाज़ार चलें?" श्रवण ने पूछा। "हाँ, चलते हैं बच्चों," पिताजी बोले। लेकिन तभी अन्दर से दादाजी ने आवाज़ दी, "बेटा पहले मुझे खेत तक ले चलो, उसके बाद बच्चों को बाज़ार ले जाना।"

"बच्चों, थोड़ी देर रुको मैं बाबा को शौच करा कर अभी आता हूँ," पिताजी बोले।

मीना हैरान हो उठी क्योंकि उसे पता ही नहीं था कि

रीतू के घर में शौचालय नहीं है। वह बोल उठी – "रीतू गाँव में तो सभी के घर में शौचालय है, तुम्हारे पिताजी ने अभी तक शौचालय क्यों नहीं बनवाया?"

रीतू ने कहा कि उसके पिताजी ऐसा चाहते हैं पर इसमें पैसा और समय दोनों बहुत लगेंगे।

"नहीं रीतू, सरपंच चाचाजी ने मेरे बाबा को बताया था कि शौचालय बनवाने में 2 हज़ार रुपये और दो–तीन दिन लगते हैं। देखो घर में शौचालय न होने से तुम्हारे दादाजी को कितनी पेरशानी हो रही है," मीना ने बताया।

मन–ही–मन कुछ सोचते हुए रीतू ने कहा, "तुम ठीक कहती हो मीना!"

जल्दी ही पिताजी दादाजी को लेकर आ गए। "जाओ बच्चों अब बाज़ार जाओ," दादाजी ने कहा।

"मीना तुम भी हमारे साथ बाज़ार चलो," रीतू के पिताजी बोले।

"ठीक है चाचाजी, मैं माँ को बता कर आती हूँ, फिर चलती हूँ," मीना खुश होकर बोली।

रास्ते में बच्चे तरह–तरह की चीज़ें

देखते हुए चल रहे थे, उन्हें पता भी नहीं चला कि कब वह बाज़ार वाले मोड़ पर पहुँच गए। अचानक पिताजी ने कहा, "बच्चों अपने–अपने पैसे लो और तुम्हें जो भी खरीदना है खरीद लो। मैं चला चाय पीने और थोड़ी गप–शप करने। देखो वहाँ सरपंचजी भी बैठे हैं।"

अभी वे लोग चाय पी ही रहे थे कि बच्चे दौड़े–दौड़े वापस पिताजी के पास आ गए।

"नमस्ते सरपंचजी," बच्चे एक साथ बोल पड़े। "नमस्ते बच्चों, कैसे हो तुम सब?" उन्होंने जवाब में कहा।

"अरे! मीना तुम भी बाज़ार घूमने आई हो?" सरपंच जी बोले।

"जी सरपंचजी!" मीना बोली।

इतने में पिताजी ने श्रवण और रीतू को हाथ में कुछ पीछे छुपाते हुए देखा।

"ये पीछे क्या छिपा रहे हो? ज़रा मैं भी तो देखूँ," वह बोले।

"पिताजी हम आपके लिए एक उपहार लाए हैं," बच्चों ने कहा।

"क्या! मेरे लिए?" पिताजी ने हैरानी

से पूछा।

"जी हाँ पिताजी, आपके लिए!" रीतू ने कहा।

"गुल्लक!!! इसका मैं क्या करूँगा?" पिताजी ने कहा।

"बचत करेंगे और घर में शौचालय बनवाएँगे। देखिए हमने पहले ही इसमें अपने बचे हुए रुपये डाल दिए हैं," श्रवण ने कहा।

"लेकिन ... " पिताजी कुछ कहने ही वाले थे कि रीतू बोल पड़ी, "नहीं पिताजी! बोलो न मीना। तुम्हीं तो कह रही थी न कि सरपंचजी ने बताया है कि केवल 2 हज़ार रुपये और दो–तीन दिन ही लगते हैं शौचालय बनवाने में।"

अब बारी सरपंचजी के बोलने की थी, "यह बात तो सोलह आने ठीक कही है, मीना बिटिया ने। मैं तुम्हें कल सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान' के बारे में बता दूँगा।"

रीतू और श्रवण के पिताजी गर्व से मुस्कुरा उठे। "आज तो मेरे बच्चों और मीना ने कमाल ही कर दिया।

अब हम –
घर में शौचालय बनवाएँगे,
वातावरण को भी स्वच्छ बनाएँगे।"

नया मेहमान

मीना खुशी से फूली नहीं समा रही है, उसे मौसी बुलाने वाला जो आने वाला है। उसकी मौसेरी बहन, गीता दीदी, माँ बनने वाली हैं और मीना के घर रहने आई हैं। पर मीना की है एक अजीब उलझन – सभी आने वाले बच्चे को कोई–ना–कोई तोहफ़ा देंगे, मीना उसे क्या दे? चॉकलेट, कपड़े या खिलौने ... पर मीना तो उसे कुछ अलग देना चाहती है। इसी सोच में डूबी मीना अपने घर के बाहर बैठी थी, तभी सुमी आई और उसने मीना से पूछा, "अरे मीना, तुम यहाँ अकेली क्यों बैठी हो?"

मीना ने उसे अपनी समस्या बताते हुए कहा, "तुम तो

जानती ही हो सुमी कि हमारे घर में एक नया मेहमान आने वाला है और सभी उसके लिए ख़रीदारी कर रहे हैं। मैं भी उसे कुछ देना चाहती हूँ, कुछ अलग, कुछ बहुत ख़ास। तुम ही बताओ ना मैं उसे क्या दूँ?"

"हम्मममम ...! कुछ अलग ... कुछ ख़ास ...! अरे हाँ! याद है कुछ दिन पहले बहनजी ने हमें बाँस के तीलों की टोकरी बनानी सिखाई थी। तो क्यों न हम नन्हे–मुन्ने के लिए भी वैसी ही टोकरी बनाएँ?" सुमी ने सुझाया।

"अरे वाह! क्या सुझाव दिया है सुमी!" मीना खुशी से उछलकर बोली।

और फिर दोनों जुट गईं टोकरी के लिए सामान इकट्ठा करने में। मीना ने पूरा घर छान मारा पर उसे रस्सी कहीं नहीं मिली।

"तुम चाचीजी से क्यों नहीं पूछ लेती कि रस्सी कहाँ है?" सुमी ने कहा।

"माँ तो गीता दीदी को लेकर स्वास्थ्य केन्द्र गई हैं। हम भी वहीं चलते हैं," मीना बोली।

मीना और सुमी स्वास्थ्य केन्द्र पहुँचे तो देखा डॉक्टर दीदी गीता दीदी को कुछ समझा रही थीं – "देखो गीता, जब नया मेहमान आएगा तो पहले कुछ दिनों तक तुम्हें उसका खूब ध्यान रखना होगा। नवजात शिशु को उसकी माँ से चिपककर रहना चाहिए, ताकि उसे अपनी माँ के शरीर से गर्मी मिलती रहे। जैसे ही बच्चा पैदा हो उसे एक साफ कपड़े से पोंछकर, मुलायम कपड़े में लपेट लेना चाहिए। नवजात शिशु को कम–से–कम सात दिनों तक नहलाना नहीं चाहिए, नहलाने से बच्चे को ठंड लग सकती है।"

डॉक्टर दीदी यह समझा ही रही थी कि अचानक गीता दीदी को दर्द उठने लगे, डॉक्टर दीदी गीता दीदी को तुरन्त अंदर कमरे में ले गईं। मीना और सुमी घर की ओर भागे, अपना तोहफ़ा तैयार करने।

फिर थोड़ी ही देर में ...

डॉक्टर दीदी ने खुशखबरी सुनाई। नया मेहमान आ गया – एक प्यारी गोल–मटोल गुड़िया।

और कुछ दिनों बाद जब गुड़िया घर आई तो अपना नन्हा–सा झूला देख बेहद खिलखिलाई और मीना का घर उसकी मीठी किलकारियों से गूंजने लगा।

तस्वीर बनाओ

"बड़ा मज़ा आएगा, जब माँ की तस्वीर बनाऊँगी, वो भी उनके जन्मदिन पर, तोहफ़ा देने के लिए!" सोमा मन–ही–मन यह सोच खुश हो रही थी।

इतने में सोमा के घर मीना आई और बोली, "कागज़, पैंसिल लेकर कहाँ जा रही हो?"

"माँ की तस्वीर बनाने," सोमा बोली, "पर माँ है कि एक जगह बैठती ही नहीं, अब तुम्हीं बताओ मीना, मैं भला तस्वीर कैसे बनाऊँ?"

"अच्छा तो यह बात है! जब चाची खाना बनाने लगेंगी, मैं उनसे ढेर सारी बातें करने लगूँगी, तब तुम उनकी

तस्वीर बना लेना," प्यारी मीना ने कहा।

"अरे वाह! काम का काम, तस्वीर इनाम!" सोमा मुस्कुराते हुए बोली।

जैसे ही मीना और सोमा आंगन की तरफ़ बढ़े, उधर से सोमा की माँ सजसंवर कर बाहर निकली।

"नमस्ते चाचीजी!" मीना ने कहा।

"खुश रहो बिटिया!" चाचीजी बोलीं।

"चाचीजी, आप कहाँ जा रही हो?" मीना ने उनसे पूछा।

"मीना बेटी मैं ज़रा आंगनवाड़ी बहनजी के पास जा रही हूँ," चाचीजी ने कहा।

"पर आज आप खाना कब बनाओगी?" सोमा ने पूछा।

"आज तो मैंने खाना सुबह ही बना लिया था," सोमा की माँ बोली।

"और हाँ सोमा! रस्सी पर सूख रहे कपड़े उठाकर तह लगाकर रख देना, दादीजी और पारो सो रहे हैं, उनके जागने पर दादी के लिए चाय बना देना और पारो को खाना खिला देना,"

माँ ने कहा।

"ठीक है माँ," सोमा ने ज़रा निराशा से कहा।

माँ के घर से जाने की देर थी कि सोमा और मीना भी आंगनवाड़ी की ओर सरपट भागे।

"सोमा, जल्दी चलो! जब चाचीजी मीटिंग में बहनजी के पास बैठेंगी तब तुम खिड़की से देखकर उनकी तस्वीर बना लेना," मीना बोली।

"ठीक है!" सोमा ने कहा।

सोमा ने खिड़की से झांकने की कोशिश की, पर सिर्फ़ बहनजी का जूड़ा ही दिखाई पड़ रहा था।

"अब क्या करें मीना?" सोमा ने पूछा।

"कोई बात नहीं! अभी जल्दी घर चलो। कहीं दादीजी और पारो उठ गए तो?" मीना ने कहा।

दोनों ने घर पहुँच कर सारा काम ख़त्म किया। सोमा ने चाय बनाकर दादी को दी। और दादी की चाय की चुस्की के साथ–साथ मीना पारो को हँसी और खेल–खेल में

खाना खिला रही थी।

सोमा भी उन्हें देखकर खुश हो रही थी और हैरान थी कि उसकी बहन कितने मज़े से खाना खा रही है। "क्यों ना मैं अपनी बहन और मीना की हँसते हुए तस्वीर बनाऊँ!" सोमा ने सोचा। इधर, मीना पारो को खाना खिला रही थी, उधर सोमा उन दोनों की तस्वीर बना रही थी।

छुक–छुक–छुक रेल चली,
पारो खाये सब्ज़ी रोटी।
पेट में है रेल खड़ी,
भूख लगे अब घड़ी–घड़ी।

"अरे वाह! इतनी प्यारी तस्वीर बनी है माँ के जन्मदिन के उपहार के लिए, चलो मीना को दिखाती हूँ," सोमा ने सोचा। फिर सोमा बोली, "मीना, तुमने तो कमाल कर दिया! पारो को खेल–खेल में खाना खिला दिया। मालूम है रोज़ मुझे और माँ को इसे खाना खिलाने के लिए

कितना जूझना पड़ता है।"

"हाँ सोमा! मेरी माँ कहती है कि यदि बच्चों की रुचि जगाई जाए तो उन्हें खाना खिलाना आसान हो जाता है," मीना ने कहा।

मिट्ठू चहका, "पारो खूब खिलखिलाती है, मज़े से खाना खाती है!"

"देखो मीना, मैंने माँ को जन्मदिन पर देने के लिए उपहार बना लिया!" सोमा ने मीना को तस्वीर दिखाते हुए कहा।

जब माँ घर पहुँची तो द्वार पर मीना, सोमा, पारो और मिट्ठू मज़ेदार खेल खेलने में मस्त थे। माँ को क्या मालूम था कि आज उन्हें इतना प्यारा उपहार मिलने वाला है।

तितली

रोज़ की तरह भोलू अपनी गाय, बकरी और भैंसों को चराने के लिए जंगल की ओर चल पड़ा।

दूसरी तरफ़ मीना अपनी टोली के साथ रंग बिरंगी तितलियों के पीछे भाग रही थी। एक फूल से दूसरे फूल पर इतराती, इठलाती, न टिकने वाली तितली के पीछे दौड़ते–दौड़ते दीपू थक कर पेड़ के नीचे बैठ गया और हाँफते हुए बोला, "मीना दीदी, बहुत प्यास लगी है।"

पर यहाँ पानी कहाँ मिलेगा? भागा–दौड़ी के इस खेल में न जाने कब वे घने जंगल में पहुँच चुके थे।

"अरे! यह हम कहाँ आ गए? यहाँ तो इन लम्बे–घने

पेड़ों के बीच ठीक से कुछ दिखता भी नहीं। अब हम घर कैसे जाएँगे?" सुमी ने घबराकर कहा।

मीना बोली, "मिट्ठू है न हमारे साथ। यह ऊपर से रास्ता बताएगा।"

"उड़कर जाता हूँ, पता लगाता हूँ!" मिट्ठू चहका।

थोड़ी ही देर में मिट्ठू ने आकर ख़बर सुनाई –

"दिख रहे हैं भोलू भईया, चरा रहें हैं अपनी गईयां।"

मिट्टू के पीछे–पीछे, 'भोलू–भईया' 'भोलू भईया,' चिल्लाते हुए बच्चे उनकी ओर दौड़ पड़े। उन्हें यहाँ देख, भोलू ने आश्चर्य से पूछा – "बच्चों तुम इस घने जंगल में क्या कर रहे हो?"

"हम रास्ता भटक गए!" सुनील ने बताया।

"चलो मैं तुम्हें गाँव तक पहुँचा देता हूँ," भोलू ने कहा। वे चल ही रहे थे कि, "अरे! वो देखो तालाब!" दीपू बोला।

सभी बच्चे तालाब की ओर दौड़ पड़े। नीचे झुककर पानी पीने ही वाले थे कि भोलू की आवाज़ सुनकर ठिठक गए।

"रुक जाओ! यह पानी गंदा है, इसे मत पीना।" परन्तु पानी तो एकदम साफ दिख रहा है।

"जो दिखता है वो हमेशा सच नहीं होता," भोलू ने समझाया। नीले, साफ दिखने वाले पानी के तालाब की दूसरी ओर, दूर, भैंसें नहा रही थी। "इस पानी को पीना बीमारी को न्योता देने जैसा है।"

सिर हिलाते हुए, बच्चे भोलू के पीछे जंगल के बाहर चल पड़े।

गाँव में पहुँचते ही दीपू की नज़र नर्स बहनजी के चमचमाते मटके पर पड़ी। "आहा! अब मैं ढेर सारा पानी पीऊँगा।"

तभी अचानक काकी की भारी आवाज़ गूंजी, "ठहरो!"

"क्यों काकी? मटके का पानी तो साफ होता है न?" दीपू बोला।

"क्या तुम कुछ भूल नहीं रहे हो? ज़रा अपने कीटाणु भरे हाथों को तो देखो। ये कीटाणु दिखते नहीं पर हज़ारों की

संख्या में हमला करने के लिए तैयार रहते हैं। कीटाणु भरे हाथ ... गन्दा पानी ... बीमारी ... कुछ समझे?" काकी ने कहा।

"हाँ काकी!" सभी बच्चे बोले।

फिर मीना ने आगे बढ़कर लुटिया उठाई और मटके से पानी निकालकर सभी बच्चों की प्यास बुझाई। पानी से फैलने वाली जानलेवा बीमारियों से अब सभी बच्चे सुरक्षित थे।

नन्हे पाठकों के शिक्षकों के लिए

1. बच्चों से पूछें कि उन्हें यह कहानियाँ मनोरंजक या शिक्षाप्रद कैसे लगीं। उनसे कहानियाँ दोहराने को कहें।
2. कहानी में उपयुक्त कठिन शब्दों पर बातचीत करें।
3. कहानी में आए प्रमुख सामाजिक मुद्दों और दी गई स्थिति में मीना की भूमिका पर सवाल–जवाब करें।
4. कहानी में प्रस्तुत मीना के प्रमुख गुणों पर बातचीत करें और बच्चों को उसके जैसा बनने की प्रेरणा भी दें।
5. बच्चों में समालोचना करने की क्षमता विकसित करें। यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे अपने साथियों के साथ अपने मुद्दों पर स्वतंत्र रूप से चर्चा करें और सामूहिक रूप से समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न करें। बच्चों को चर्चा में सहभाग करने के लिए उन्हें बढ़ावा देना चाहिए।
6. बच्चों से पूछें कि कहानी में प्रस्तुत स्थिति में वे क्या करते और क्यों?
7. कहानी के मुख्य संदेश के बारे में बच्चों से पूछें।
8. बच्चों से पूछें, ''आपको इसमें कौन–सा पात्र अच्छा लगा और क्यों?'' यह भी पूछें, ''आपको इसमें कौन–सा पात्र अच्छा नहीं लगा और क्यों?''
9. कहानी में दी गई गतिविधियों को कक्षा में करवाएँ और बच्चों का उस गतिविधि में सहभाग सुनिश्चत करें।
10. बच्चों को मीना की दुनिया में दी गई कहानियों को अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बाँटने को कहें।

भाग एक

मीना की दुनिया से कुछ अनमोल पल

अख़बार से क्या सीखा | गुल्लक भरो | नया मेहमान
तस्वीर बनाओ | तितली

unicef

73, लोदी स्टेट, नई दिल्ली - 110003

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष, उत्तर प्रदेश का युनिसेफ़ कार्यालय,
3/194, विशाल खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ - 226010, उत्तर प्रदेश
वेबसाइट - www.unicef.in